# 1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे मुक्तिदाता
परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु
की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है,
2 तीमुथियुस के, नाम जो विश्वास में मेरा
सच्चा बेटा है, पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु
मसीह यीशु की ओर से तुम्हें असीम कृपा[a],
दया, और शान्ति मिलती रहे।
3 मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुम्हें
समझाया था कि इफ़िसुस में रह कर कुछ
लोगों को आज्ञा दो, कि वे दूसरी कोई शिक्षा[b]
न सिखाएँ। 4 उन ऐसी झूठी कहानियों और
अनगिनित वंशावलियों पर अपना ध्यान न
लगाएँ, जिन से झगड़े होते हैं, जो परमेश्वर
की उस योजना के अनुसार नहीं हैं, जो
विश्वास से सम्बन्ध रखती हैं। 5 आज्ञा का
मकसद्[c] यह है कि शुद्ध मन, अच्छे विवेक
और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न
हो। 6 इन को छोड़कर कई लोग फिरकर
बेकार की बातों में भटक गए हैं। 7 वे धार्मिक
शिक्षक[d] तो बनना चाहते हैं, परन्तु जो बातें
कहते और जिन पर ज़ोर डाल कर बोलते हैं,
उनको समझते भी नहीं।
8 लेकिन हम जानते हैं कि यदि कोई
नियम शास्त्र[e] को सही तरीके से काम में
लाए, तो यह भला है। 9 यह जान कर कि
नियमशास्त्र विश्वासी[f] के लिए नहीं, परन्तु
अधर्मियों, मनमाना आचरण करने वालों,
भक्तिहीनों, अपवित्र और अशुद्ध लोगों,
माँ-बाप की हत्या करने वालों, हत्यारों,
10 व्याभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के
बेचने वालों, झूठों, और झूठी शपथ खाने
वालों, और इन को छोड़ खरे संदेश के सब
विरोधियों के लिए ठहराया गया है। 11 यही
धन्यवाद के योग्य परमेश्वर की महिमा के
उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सुपुर्द
किया गया है।
12 मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिन्होंने
मुझे योग्यता दी है, धन्यवाद करता हूँ कि
उन्होंने मुझे भरोसेमन्द समझ कर अपनी
सेवा के लिए ठहराया। 13 मैं तो पहले निन्दा
करने वाला, सताने वाला, और अन्याय
करने वाला था, फिर भी मुझ पर दया
हुई, क्योंकि मैंने मात्र धार्मिक जोश में
बिना-समझे-बूझे, अज्ञानता के साथ ये काम
किए थे। 14 हमारे प्रभु महान् की कृपा उस
विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु
में है, मुझ पर बहुतायत से हुई।
15 यह बात सच और हर प्रकार से स्वीकार
करने के योग्य है कि मसीह यीशु अपराधियों
को मुक्ति देने के लिए दुनिया में आए,
जिन में सब से बड़ा मैं हूँ। 16 परन्तु मुझ
पर इसलिए दया हुई कि मुझ सब से
बड़े अपराधी में यीशु मसीह अपनी पूरी
सहनशीलता दिखाएँ, ताकि जो लोग उन[g] पर
अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे, उनके
लिए मैं एक नमूना बनूँ। 17 अब सनातन राजा

---

[a] **1.2** अनुग्रह [b] **1.3** सिद्धान्त [c] **1.5** उद्देश्य [d] **1.7** नियमशास्त्र के सिखाने वाले [e] **1.8** व्यवस्था
[f] **1.9** सज़ा मुक्त ठहराए व्यक्ति [g] **1.16** यीशु मसीह

अर्थात् अविनाशी, अनदेखे और बुद्धिमान परमेश्वर का आदर और महिमा आने वाले सभी युगों तक होता रहे। ऐसा ही हो।

18 हे बेटे, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तुम्हारे विषय में की गयीं थीं, तुम्हारे लिए मेरा आदेश यह है कि तुम उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रहो, 19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को संभाल कर रखो, जिसे दूर करने की वजह से कितनों का विश्वास रूपी जहाज़ डूब गया। 20 उन्हीं में से हिमुनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान के सुपुर्द कर दिया है, कि उन्हें परमेश्वर की निन्दा न करने का पाठ सिखाया जाए।

**2** अब मैं सब से पहले यह बिनती करता हूँ कि बिनती, प्रार्थना, निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ। 2 राजाओं[a], अधिकारियों और सब ऊँचे पद वालों के लिए इसलिए कि हम शान्तिपूर्वक और चैन के साथ सारी भक्ति और परमेश्वर के प्रति भय युक्त आदर के साथ जीवन बिता सकें। 3 यह हमारे मुक्तिदाता परमेश्वर को अच्छा लगता, 4 और भाता भी है, वह यह चाहते हैं कि सब मनुष्यों को मुक्ति मिले और वे सच्चाई को अच्छी तरह पहचान लें। 5 क्योंकि परमेश्वर एक ही हैं, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचौलिया[b] हैं, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य बने, 6 जिन्होंने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और इसकी गवाही सही समय पर दी गयी।

7 मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसीलिए संदेश देने वाला, प्रेरित, अन्यजातियों के लिए ईमान[c] और सच्चाई का उपदेशक ठहराया गया।

8 इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर कहीं मनुष्य बिना गुस्से और विवाद के पवित्र हाथों को उठा कर प्रार्थना किया करें।

9 वैसे ही स्त्रियाँ भी शालीनता और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे, न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और कीमती कपड़ों से, लेकिन 10 भले कामों से अपने आप को सजाएँ। जो महिलाएँ स्वयं को धर्मी और भले काम करने वाली समझती हैं उनको यह वाजिब भी है।

11 महिलाओं को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। 12 मैं यह भी कहता हूँ कि महिलाएँ न उपदेश करें, और न पुरुष पर आज्ञा चलाएँ, परन्तु चुपचाप रहें। 13 क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। 14 और आदम बहकाया न गया, परन्तु स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। 15 लेकिन यदि वे[d] संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें, तो बच्चों को जन्म देने से उनका भला ही होगा।

**3** यह बात सच है कि जो देख-रेख करने वाला[e] बनना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। 2 इसलिए चाहिए कि देख-रेख[f] करने वाला, आरोप मुक्त, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, मेहमान-नवाज़ी करने वाला, और सिखाने में निपुण हो। 3 शराबी या मारपीट करने वाला न हो, पैसों का लोभी न हो, बल्कि कोमल स्वभाव का हो। वह झगड़ालू और लालची भी न हो। 4 वह अपने घर का अच्छा इन्तज़ाम करता हो, और उसके बच्चे पूरी

[a] 2.2 नेताओं [b] 2.5 मध्यस्थ [c] 2.7 विश्वास [d] 2.15 स्त्रियाँ [e] 3.1 पासबान [f] 3.2 चरवाही

अधीनता के साथ उसका आदर करते हों।
5 जब कोई अपने ही घर का प्रबन्ध करना न
जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया[a] की
देख-भाल कैसे करेगा? 6 दूसरी बात यह, कि
देख रेख करने वाला नया शिष्य न हो, ऐसा
न हो, कि घमण्ड से भर कर शैतान के समान
सज़ा पाए। 7 बाहर वालों के बीच उसकी
गवाही अच्छी हो, ऐसा न हो कि निन्दित
होकर शैतान के फँदे में फँस जाए।
8 वैसे ही सेवकों को भी सम्मानीय होना
चाहिए। वे दोरंगी, शराबी और पैसों के
लालची न हों, 9 लेकिन विश्वास के भेद
को शुद्ध विवेक से संभालें। 10 इन्हें भी पहले
परखा जाए, उसके बाद यदि निर्दोष निकलें,
तो सेवक का काम करें।
11 इसी प्रकार से उनकी पत्नियों को
भी आदरणीय होना चाहिए, निन्दा करने
वाली नहीं, परन्तु संयमी और सब बातों में
विश्वासयोग्य हों।
12 सेवक एक ही पत्नी के पति हों और
अपने बच्चों पर उचित निगरानी रखते हों और
अपने घरों की ज़िम्मेदारी निभाना जानते हों।
13 क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह
से कर चुके हैं, वे लोगों से इज़्ज़त पाते हैं
और मसीह यीशु में उनके भरोसे के कारण
उनका अत्मविश्वास बढ़ता है।
14 मैं तुम्हारे पास जल्दी आने की आशा
रखने पर भी ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता
हूँ, 15 कि अगर मेरे आने में देर हो, तो
तुम जान लो कि परमेश्वर के घर में, जो
जीवित परमेश्वर की कलीसिया[b] है और
सत्य का खम्भा और नींव है, उसमें कैसा
व्यवहार करना चाहिए। 16 इस में कोई शक
नहीं कि खरे जीवन[c] का भेद गम्भीर है अर्थात्
परमेश्वर जो देह में आए, उनके वायदे पवित्र
आत्मा के द्वारा सच ठहरे, स्वर्गदूतों को
दिखाई दिए, गैर-यहूदियों में उनका सन्देश
सुनाया गया, दुनिया में उन पर विश्वास
किया गया, और महिमा में ऊपर उठाए गए।

4 लेकिन आत्मा स्पष्टता से कहता है,
कि आने वाले समयों में बहुत लोग
भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की
शिक्षाओं पर मन लगा कर विश्वास से बहक
जाएँगे। 2 वे पाखण्ड के साथ झूठ बोलेंगे,
उनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा
गया हो। 3 वे शादी[d] करने से रोकेंगे और खाने
की कुछ वस्तुओं से परहेज़ करने की आज्ञा
देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए बनाया कि
विश्वासी, और सत्य के पहचानने वाले,
धन्यवाद के साथ खाएँ। 4 इसका कारण यह
है कि परमेश्वर द्वारा बनायी गयी हर वस्तु
अच्छी है और कुछ भी अस्वीकार करने के
लायक नहीं, यदि उसे शुक्रगुज़ारी[e] के साथ
खाया जाए, 5 क्योंकि वह परमेश्वर के वचन
और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।
6 अगर तुम भाईयों को इस बारे में समझाते
रहोगे, तो मसीह यीशु के अच्छे सेवक
ठहरोगे और विश्वास और उस अच्छे
उपदेश की बातों से, जो तुम मानते आए
हो, तुम्हारा पालन-पोषण और विकास होता
रहेगा। 7 लेकिन अशुद्ध[f] और बूढ़ियों की सी
कहानियों से बचे रहो, और पवित्र जीवन
की ओर यत्न से बढ़ते जाओ। 8 क्योंकि
शारीरिक व्यायाम का लाभ सीमित है, पर
पवित्र जीवन सब बातों के लिए फ़ायदेमन्द
है, क्योंकि इस समय के और आने वाले
जीवन का वायदा भी इसी में है।
9 और यह बात सच और हर तरह से मानने
के योग्य है। 10 हम इसीलिये मेहनत करते

[a] 3.5 चर्च [b] 3.15 चर्च [c] 3.16 भक्ति [d] 4.3 विवाह [e] 4.4 धन्यवाद [f] 4.7 परमेश्वर रहित

हैं और निन्दा सहते हैं, क्योंकि हम जीवित
परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, जो सब लोगों
के खासकर विश्वासियों के मुक्तिदाता हैं।
11 इन बातों की आज्ञा दो और उन्हें सिखाते
रहो। 12 कोई तुम्हारी जवानी को तुच्छ न
समझने पाए, लेकिन बातचीत, चाल-चलन,
प्रेम, आत्मा में, विश्वास और पवित्रता में
विश्वासियों के लिए नमूना बन जाओ। 13 मेरे
आने तक पढ़ने, और उपदेश और सिखाने में
लगे रहो। 14 उस वरदान[a] के विषय में जो तुम
में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा अगुवों के
हाथ रखते समय तुमने पाया था, लापरवाह
मत रहो।
15 उन बातों को सोचते रहो और उन्हीं में
अपना पूरा ध्यान लगाए रहो, ताकि तुम्हारी
तरक्की सब पर प्रगट हो। अपने और अपने
उपदेश के विषय में सावधान रहो। 16 इन
बातों में स्थिर बने रहो, क्योंकि अगर ऐसा
करते रहोगे तो तुम अपने, और अपने सुनने
वालों के लिए भी मुक्ति का कारण बनोगे।

**5** किसी बूढ़े को न डाँटो, लेकिन उन्हें
पिता जान कर, जवानों को भाई जान
कर 2 और बूढ़ी स्त्रियों को माता जान
कर समझा दो। जवान महिलाओं को पूरी
पवित्रता से बहन जान कर समझा दो।
3 उन विधवाओं को इज़्ज़त दो जो सचमुच
में विधवा हैं 4 यदि किसी विधवा के बच्चे
या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही
खानदान के साथ योग्य बर्ताव करना, और
अपने माता-पिता आदि को उचित आदर[b]
देना सीखें, यह परमेश्वर को अच्छा लगता
है। 5 जो सचमुच में विधवा है और उसका
कोई नहीं, वह परमेश्वर पर आशा रखती है।
वह रात-दिन बिनती और प्रार्थना में लवलीन
रहती है। 6 परन्तु जो भोग विलास में पड़ गई,
वह जीते जी मर गई है। 7 इन बातों की भी
आज्ञा दिया करो ताकि वे निर्दोष रहें। 8 यदि
कोई अपनों की और विशेष करके अपने
घराने की ज़रूरतों पर ध्यान न दे, तो वह
विश्वास से हट गया है, और अविश्वासी
से भी अधिक बुरा है।
9 उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो
साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही
पति की पत्नी रही हो, 10 और भले काम में
उसका अच्छा नाम रहा हो, जिस ने बच्चों का
पालन-पोषण किया हो, मेहमानों की सेवा की
हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए हों, दुखियों की
सहायता की हो, और हर एक भले काम में
मन लगाया हो।
11 लेकिन जवान विधवाओं के नाम न
लिखना, क्योंकि जब वे मसीह की खिलाफ़त
करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो
विवाह करना चाहती हैं, 12 और जीवन
भर विधवा रहने के फ़ैसले को तोड़ने की
दोषी ठहरती हैं। 13 इसके साथ ही साथ वे
घर-घर फिरकर आलसी होना सीखती हैं,
और केवल आलसी ही नहीं, किन्तु बकवास
और बुराई करती रहती और दूसरों के काम
में दखलअंदाज़ी करती हैं और अनुचित बातें
बोलती हैं। 14 इसलिए मैं यह चाहता हूँ कि
जवान विधवाएँ विवाह करें और बच्चों को
जन्म दें और घर की ज़िम्मेदारियाँ लें, और
किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर
न दें। 15 क्योंकि बहुत सी बहककर शैतान
के पीछे हो चुकी हैं।
16 यदि किसी विश्वासी या विश्वासिनी के
यहाँ विधवा हो, तो वही उनकी मदद करे,
कि चर्च पर भार न हो, ताकि चर्च उनकी
सहायता कर सके, जो सचमुच विधवाएँ हैं।

[a] **4.14** ईनाम [b] **5.4** हक

17 जो अगुवे अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष
करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में
मेहनत करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे
जाएँ। 18 क्योंकि बाइबल में लिखा है कि
दाँवने वाले बैल का मुँह न बान्धना, क्योंकि
मजदूर अपनी मज़दूरी का हक़्क़दार है।
19 यदि किसी प्राचीन पर दोष लगाया जाता
है, तो बिना दो या तीन गवाहों के न सुनो।
20 अपराध करने वालों को सब के सामने
डाँटो, ताकि और लोग भी डरें।
21 परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने
हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जान कर मैं तुम्हें
चेतावनी देता हूँ कि तुम मन खोलकर इन
बातों को माना करो, और कोई काम पक्षपात
से न करना।
22 किसी पर जल्दी हाथ न रखना और
दूसरों के गुनाहों में भागी न होना। अपने
आपको पवित्र बनाए रखो।
23 भविष्य में केवल पानी ही पीने वाले न
रहो, पर अपने पेट के खराब होने और अपने
बार-बार बीमार होने के कारण थोड़ा-थोड़ा
अंगूर का रस[a] भी काम में लाया करो।
24 कितने मनुष्यों के बुरे काम प्रगट हो जाते
हैं, और इन्साफ़ के लिए पहले से पहुँच जाते
हैं, लेकिन कुछ के साथ ऐसा नहीं होता,
उनकी बुराई बाद में दिखती है। 25 वैसे ही
कितनों के भले काम भी दिखाई देते हैं, और
जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।

6 जितने लोग गुलामी के बन्धन में हैं, वे
अपने-अपने स्वामी को बड़े आदर के
योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और
उपदेश की निन्दा न हो। 2 और जिन के
स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के
कारण तुच्छ न जानें, बल्कि उनकी और भी
सेवा करें, क्योंकि जिन की सेवा की जा रही
है, वे यीशु को मानने वाले हैं और यीशु उनको
चाहते हैं। इन बातों के बारे में उपदेश दिया
करो और समझाते रहो।
3 यदि कोई और ही तरह का उपदेश देता
है, और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु
यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश
को नहीं मानता, जिस में सही चालचलन की
खास अहमियत है, 4 तो वह व्यक्ति घमण्डी
हो गया है, और कुछ नहीं जानता, वरन् उसमें
विवाद और शब्दों पर तर्क करने का स्वभाव
है। इस स्वभाव के कारण डाह, और झगड़े,
और निन्दा की बातें, बुरे-बुरे सन्देह 5 और
उन लोगों में बेकार के लड़ाई-झगड़े होने
लगते हैं। ऐसे लोग जिन की बुद्धि बिगड़ गई
है और सत्य से खाली हो गए हैं, वे समझते
हैं कि भक्ति[b] कमाई का तरीका है।
6 लेकिन शान्ति[c] के साथ आत्मिक जीवन
बड़ी कमाई है। 7 क्योंकि न हम जगत में
कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।
8 यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो,
तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। 9 लेकिन
जो अमीर होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा,
और फंदे और बहुत सी बेकार की और
नुकसानदायक वासनाओं में फँसते हैं, जो
मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और बर्बादी के
समुद्र में डुबा देती हैं। 10 क्योंकि पैसों का
लोभ सब तरह की बुराइयों की जड़ है,
जिसे पाने की कोशिश करते हुए कई लोग
विश्वास से भटक गए और अपने आप को
तरह-तरह के दुखों से पीड़ित कर दिया है।
11 परन्तु हे परमेश्वर के जन, तुम इन बातों
से भागो और अच्छे चालचलन, आराधना के
जीवन, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का
पीछा करो। 12 विश्वास की अच्छी कुश्ती

[a] 5.23 दाखरस [b] 6.5 मसीही सेवा [c] 6.6 सन्तोष

लड़ो और उस अनन्त जीवन को थामे रहो,
जिस के लिए तुम्हें बुलाया गया, और बहुत
गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।
13 मैं तुम्हें परमेश्वर के जो सब वस्तुओं को
जीवन प्रदान करते हैं, और मसीह यीशु के
सामने, जिन्होंने पुन्तियुस पिलातुस के सामने
अच्छा अंगीकार किया, यह हुक्म देता हूँ,
14 कि तुम हमारे स्वामी यीशु मसीह के आने
तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष
रखो। 15 इसे वह ठीक समयों में दिखाएँगे,
जो परमधन्य और एक मात्र शासक और
राजाओं के राजा, और अधिकारियों के
अधिकारी हैं। 16 और अमरता केवल उन्हीं
की है, और वह ऐसी रोशनी में रहते हैं,
जिन तक कोई भी नहीं पहुँच सकता, न उन्हें
किसी इन्सान ने देखा है, और न कभी देख
सकता है। उनका मान-सम्मान और राज्य
युगानुयुग रहेगा। ऐसा ही हो।

17 इस संसार के अमीरों को आज्ञा दो, कि
वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा
न रखें, परन्तु परमेश्वर पर आशा रखें, जो
हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से
देते हैं। 18 वे भलाई करें, और भले कामों में
अमीर बनें। साथ ही साथ देने के लिए तैयार
और सहायता करने में आगे हों; 19 इस तरह
से भविष्य के लिये वे अपना खज़ाना इकट्ठा
करेंगे, जो कि एक मज़बूत बुनियाद होगी,
ताकि वे असली ज़िन्दगी का स्वाद ले सकें।
20 हे तीमुथियुस, जो शिक्षा तुम्हें सौंपी गयी
है, उसकी रखवाली करो, और जिस ज्ञान को
ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवास
और विरोध की बातों से दूर रहो। 21 बहुत से
लोग इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास
से भटक गए हैं। तुम पर असीम कृपा[a] बनी
रहे।

[a] **6.21** अनुग्रह

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com